ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-5*October-2014

हिन्दी साहित्य में नारी : संघर्ष के स्वरूप की पृष्ठभूमि

Dear Author,
Please provide **ABSTRACT**, **KEY WORDS and REFERENCES must be in MLA pattern**, for this paper with the proof urgently otherwise your paper may be transfer for next issues untill above are recieved.

गायत्री चौहान
सहा. प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
शास. स्नातकोत्तर अग्रणी
महाविद्यालय खरगोन,
म0प्र0

सारांश

मुख्य शब्द : Please Add Some Keywords

प्रस्तावना

नारी–संघर्ष और हिन्दी साहित्य का संबंध प्रारंभ से ही रहा हैं। अतीत से लेकर वर्तमान तक नारी का विरोध, उसका संघर्ष किसी न किसी रूप में हमारे सामने आ ही जाता है। नारी संघर्ष के कई स्वरूप हम देख रहे हैं। वर्तमान समय में नारी सशक्तिकरण, महिला आरक्षण आदि के माध्यम से नारीशक्ति के उत्थान की परिकल्पना यह दर्शाती है कि यह सब नारी के संघर्षों का प्रतिफल है। स्वतंत्रता से पूर्व भी यह संघर्ष किसी न किसी रूप में चलता ही रहा है।

नारी वैदिक युग में श्रृद्धा व सम्मान की पात्र थी। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" की उक्ति वैदिक साहित्य में नारी की महत्ता का गुणगान करती है, किन्तु बाद में नारी को भोग्य मानकर उनका शोषण किया गया। समाज में लड़की मे जन्म पर दुःख और लड़के के जन्म पर सुख की अवधारणा आज भी विद्यमान हैं। एक ओर नारी को गृहलक्ष्मी माना जाता है और दूसरी ओर उसके साथ हर स्तर पर अन्याय किया जाता है।

आज की नारी अपना जीवन अच्छे से जीना चाहती है। फिर भी नारी का संपूर्ण जीवन संघर्ष में ही गुजरता है। पुरूष प्रधान समाज में नारी का चारों ओर शोषण हो रहा है। उठते–बैठते, चलते–फिरते समाज मे महिलाओं को पल–पल सताने वाली समस्या देश के हर कोने में दृष्टिगोचर होती है। नारी सहृदय होते हुए भी उनका जीवन हर परिस्थिति में कठिन है। भोग्या की वस्तु मानने की प्रथा पुरानी है। जीवनभर समझौता करना नारी के चरित्र में है। साहित्य के क्षेत्र में नारी के संघर्ष को प्रत्येक कथाकार/कहानीकार ने चित्रित किया है। प्रेमचंद, यशपाल, शिवानी, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु, हजारी प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा से जैनेद्र के साहित्य में नारी–संघर्ष का पर्याय बनकर उभरती है।

वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि इस काल में नारियों की स्थिति समाज में सम्मानजनक रूप लिए हुए थी। जैसे–जैसे वैदिग युग समाप्त होता गया, वैसे–वैसे नारी की स्थिति में ह्रास होता गया। एक ओर हम नारी को गृहलक्ष्मी की संज्ञा देते है तो दूसरी ओर उसे दासी भी कहा जाता है। नारी–संघर्ष का स्वरूप हमें रामायण, महाभारत में भी दिखायी देता हैं। सीता, द्रोपदी, कुन्ती, तारा, अहिल्या आदि के संघर्ष से हम सब अवगत है। आज की नारी शिक्षित होते हुए भी परम्पराओं, रूढ़ियों और संस्कारों से संघर्ष करती हुई दिखायी देती हैं। वस्तुतः संघर्ष नारी का पर्याय बन चुका है। नारी–संघर्ष करते हुए भी अपने कर्तव्य और धर्म का पालन करती रहती है। फिर चाहे उन्हें इसके लिए कितने भी संघर्ष क्यों न करना पड़े?

नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं और साथ ही समाज के अभिन्न और अनिवार्य अंग भी । समाज व्यवस्था का संतुलन और संगठन इस बात पर निर्भर करता है कि दोनों के पारस्परिक संबंध कैसे है। नारी और पुरूष का पारस्परिक सहयोग समाज को प्रगति की दिशा में अग्रसर करता है, लेकिन नारी–पुरूष के संबंधों का तनाव एवं संघर्ष अनेक सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करने वाला होता हैं। प्रेमचंदयुगीन भारतीय समाज में नारी और पुरूष मे संबंधों में तनाव की स्थिति चल रही थी, जिसके लिए परम्परागत जीवनमूल्यों

एवं सामाजिक आदर्शों को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। नैतिकता और आदर्श के नाम पर समय–समय पर भारतीय नारी पर जो अनुज्ञाएँ आरोपित की गयी , वे कालान्तर में उनके लिए सामाजिक अवरोध की बेड़ियाँ बन गयी।

प्रेमचन्दीय समाज मे नैतिकता का दोहरा मानदण्ड प्रचलित था। जिन कार्यों के लिए पुरूष की कोई आलोचना नहीं होती थी, उन्हीं के कारण नारी पतिता और कुलटा समझी जाती थी। नारी और पुरूष की इस सामाजिक स्थिति के वैषम्य तथा उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न नारी जीवन के संघर्ष को प्रेमचंद ने अपनी गहन सामाजिक दृष्टि से परखा था।

नारी–जीवन की समस्याएँ प्रेमचंद के सम्मुख कितनी तीव्रता से विद्यमान थी, इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि प्रेमचंद के प्रारंभिक उपन्यासों– "प्रेमा", "वरदान", "सेवासदन" आदि का केन्द्र बिन्दु नारी जीवन और उसकी समस्याएँ ही है।

जैनेन्द्रजी ने साहित्य में नारी संवेदनाओं को अधिक सफलता से प्रस्तुत किया है। नारी–पुरूष संबंधों को पारस्परिकता के आधार पर उन्होंने लिखा है। नारी–चरित्र पर जैनेन्द्रजी ने विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। भारतीय समाज में नारी को विशेष स्थान प्राप्त है। जहाँ नारी बहुत जल्दी ही ख्याति अर्जित करती है तो सामाजिक लाँछन का लक्ष्य भी शीघ्र बन सकती है। उनके साहित्य में नारी कमजोर नहीं वरन् अपने अधिकारों के लिए उन्हें प्राप्त करने के लिए लगातार संघर्ष कर रही हैं।

यशपाल की नारी पात्रों में भी मानसिक संवेदनाएँ परिलक्षित होती हैं। यशपाल के नारी पात्र अपने सम्मान के लिए संघर्ष करते दिखाई देते है। यद्यपि यशपाल के नारी पात्र दैहिक–ऐतिहासिक धरातल के लगते हैं और उनमें काल्पनिकता की प्रधानता है।

शिवानीजी के उपन्यास "अपराधिनी", "मायापुरी", "चौदह फेरे", "भैरवी","स्वयंसिद्ध","रति–विलाप", "कृष्णकली" आदि उपन्यासों में हमें नारी विविध रूपों में संघर्ष करती दिखाई देती है। फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने उपन्यासों में नारी को संघर्ष करते हुए चित्रित किया है। "मैला आँचल" एक आँचकिल उपन्यास है और उसके नारी–पात्रों में एक शिक्षित होकर संघर्ष कर रही है तो दूसरी अशिक्षित है।

अमृतलाल नागर ने अपने कई उपन्यासों में नारी के उत्थान की बात कहीं हैं, लेकिन अमृत और विष उपन्यास में उन्होंने नारी जाग्रति की ओर विशेष ध्यान दिया है। इस उपन्यास के स्त्री पात्र किसी न किसी रूप मे अपने अधिकारों के प्रति लड़ रहे है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास पुनर्नवा, विशाल भारत, चारूचंद्र लेख, अनामदास का पोथा, बाणभट्ट की आत्मकथा आदि ऐसे उपन्यास है जिनमें नारी को संघर्षवादी बताया है। नारी समाज में अपना स्थान पाने के लिए सामाजिक संघर्ष करती है। नारी अपने आप में ही एक ऐसा पात्र है जिसे निरन्तर संघर्ष में ही जीना है और संघर्ष करते हुए ही मरना है।

अज्ञेयजी के उपन्यासों में भी हमें नारी–संघर्ष दिखायी देता है। अज्ञेयजी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के कथाकार है और इनके उपन्यासों मे नारी का सामाजिक संघर्ष अधिक दिखायी देता है।

महादेवी वर्मा ने नारी का विरह रूप प्रस्तुत किया है। उनकी कृतियों में वेदना सर्वोपरि है। "दीपशिखा" में वेदना ने मानवीय ममता का रूप लिया हैं जिससे कहीं–न–कहीं वेदना के साथ विरह रूप भी दिखायी देता है। महादेवीजी की कृतियों में संपूर्ण नारी–वेदना से घिरी हुई हैं। नारी का सम्पूर्ण जीवन वेदना और संघर्ष करता हुआ ही दिखाया जाता हैं। वह जाग्रत नहीं होती । वह सदैव अपने को इस समाज के झूठे विश्वास पर घिरा हुआ पाती रहेगी।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में नारी–संघर्ष को स्थान दिया गया हैं। विभिन्न रचनाकारों ने नारी संघर्ष के विभिन्न पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाई है। नारी–संघर्ष को प्रेमंचद ने अपने साहित्य में प्रमुख स्थान दिया हैं। इसी प्रकार यशपाल, शिवानी, फणीश्वरनाथ रेणु, अमृतलाल नागर, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा अज्ञेय के साहित्यों में भी नारी संघर्ष दिखाई देता हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद साहित्य में व्यक्ति और समाज–डॉ. रक्षापुरी
2. मुझमे बहते जैनेन्द्र–गोविन्द मिश्र
3. प्रेमचंद युग के हिन्दी उपन्यास–डॉ. मोहनलाल रत्नाकर
4. हिन्दी उपन्यासः प्रेम और जीवन– डॉ. शांति भारद्वाज
5. हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण– डॉ. बिन्दु अग्रवाल
6. साहित्यानुशीलन–श्री शिवदानसिंह चौहान
7. विचार और विश्लेषण– डॉ. नगेन्द्र